Emperor Journal of Classical Tamil Studies

ISSN:2582-2977 **Mayas Publication®** www.mayas.info

Volume-VIII **Issue-XI** **November 2026**

"जामिनी रॉय की पटचित्र शैली और उसका समकालीन कला पर प्रभाव"

Pravesh Chandra Verma
Research Scholar,
College of Fine Arts Teerthanker Mahaveer University,
Moradabad.

Dr. Farha Deeba
Associate Professor,
College of Fine Arts Teerthanker Mahaveer University,
Moradabad.

सारांश

जामिनी रॉय भारतीय आधुनिक कला के उन प्रमुख कलाकारों में से हैं जिन्होंने पाश्चात्य कला प्रभावों से हटकर भारतीय लोककला, विशेषकर बंगाल की पटचित्र परंपरा को आधुनिक चित्रकला में नई पहचान दिलाई। उन्होंने ग्रामीण जीवन, लोककथाओं, धार्मिक चरित्रों और जनसांस्कृतिक भावनाओं को सरल रेखाओं, सपाट रंगों और प्रतीकात्मक रूपाकारों के माध्यम से अभिव्यक्त किया। उनकी कला में न तो यथार्थवाद का बोझ था और न ही अत्यधिक अलंकरण; इसके बजाय उन्होंने लोक संवेदना, सहजता और भारतीय सौंदर्यबोध को आधार बनाया।

पटचित्र की शैलीगत विशेषताएँ जैसे स्पष्ट बाहरी रेखाएँ, सीमित किन्तु प्रभावी रंग-योजना, सजावटी पैटर्न, तथा कथा-आधारित संरचना जामिनी रॉय के कार्यों में एक नई आधुनिकता के साथ उभरती हैं। यह शैली भारतीय समकालीन कलाकारों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी, जिन्होंने अपनी कला में लोक परंपरा और आधुनिक अभिव्यक्तियों का समन्वय शुरू किया। समकालीन कला संस्थानों और गैलरियों में लोकशैली-प्रेरित रचनाओं की बढ़ती उपस्थिति जामिनी रॉय के प्रभाव को और अधिक पुष्ट करती है।

आज के कलाकार उनके दृष्टिकोण से प्रेरित होकर परंपरागत कला को आधुनिक अर्थ-प्रसंगों से जोड़ रहे हैं, जिससे भारतीय कला में "लोक-सौंदर्य आधारित आधुनिकता" का एक नया अध्याय विकसित हुआ है। इस प्रकार, जामिनी रॉय की पटचित्र शैली ने न केवल भारतीय आधुनिक कला की दिशा बदली, बल्कि समकालीन कला को भारतीय सांस्कृतिक जड़ों से पुनः जोड़ने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

मुख्य शब्द: पटचित्र शैली, लोककला, बंगाल लोकपरंपरा, भारतीय आधुनिक कला, समकालीन चित्रकला, लोकजीवन, कथा-आधारित चित्रण, परंपरा और आधुनिकता,

I.परिचय

भारतीय आधुनिक कला के इतिहास में जामिनी रॉय का स्थान अत्यंत विशिष्ट है। बीसवीं शताब्दी का आरंभ भारतीय कला के लिए एक संक्रमणकाल था, जब एक ओर यूरोपीय कला-शिक्षा, रेखांकन और तेलचित्र शैली भारतीय कलाकारों पर प्रभाव डाल रही थी, वहीं दूसरी ओर स्वदेशी चेतना और सांस्कृतिक आत्मनिर्भरता की भावना भी समाज में पुनर्जीवित हो रही थी। ऐसे समय में जामिनी रॉय का कलात्मक दृष्टिकोण भारतीय कला को एक नई दिशा प्रदान करता है। उन्होंने अकादमिक यथार्थवाद, त्रि-आयामी मॉडलिंग और यूरोपीय तकनीकों को त्यागकर भारतीय लोककला विशेषकर बंगाल की पटचित्र परंपरा को अपनाया। यह निर्णय केवल रुचिगत या शैलीगत परिवर्तन नहीं था; बल्कि यह भारतीय सांस्कृतिक पहचान, लोकजीवन और सामूहिक कला चेतना को आधुनिक कला में स्थापित करने का एक सशक्त कदम था।

पटचित्र बंगाल की एक अत्यंत प्राचीन और कथा आधारित लोककला है, जिसमें स्पष्ट रेखाएँ, सपाट रंग, कथात्मक पैनल, धार्मिक घटनाएँ, लोककथाएँ और भावपूर्ण संयोजन महत्वपूर्ण होते हैं। जामिनी रॉय ने इसमें व्याप्त सरलता, सहजता और लोक-सत्य को अपने कला-विचार का मूल माना। उनके लिए कला केवल दृश्य सौंदर्य का विषय नहीं थी, बल्कि यह सांस्कृतिक अनुभव और सामूहिक स्मृति का जीवंत रूप थी। उन्होंने जिस काल में लोककला को आधुनिक संदर्भ में परिवर्तित किया, वह समय भारतीय कला-जगत में अभूतपूर्व परिवर्तन का था। उस समय आधुनिकता का अर्थ पश्चिमी तकनीकों और प्रभावों से जुड़ा हुआ था; किन्तु जामिनी रॉय ने इस विचार को उलटते हुए यह सिद्ध किया कि आधुनिकता का आधार देशज परंपरा और सांस्कृतिक स्मृति भी हो सकती है।

समकालीन परिदृश्य में जामिनी रॉय की पटचित्र शैली केवल एक कलात्मक प्रयोग नहीं, बल्कि भारतीय आधुनिकता का वैकल्पिक प्रतिमान बन चुकी है। आज अनेक कलाकार न केवल उनकी शैली को अपनाते हैं, बल्कि भारतीय लोककला को वैश्विक कला-भाषा में पुनः प्रतिष्ठित करने का प्रयास कर रहे हैं। डिज़ाइन, ग्राफिक मीडिया, इलस्ट्रेशन, एनीमेशन तथा

विज्ञापन जगत में भी जामिनी रॉय के रूपांकन प्रभावशाली रूप में उपस्थित हैं। इस शोध-पत्र का उद्देश्य जामिनी रॉय की पटचित्र शैली, उसके विकास, उसकी सांस्कृतिक आधारभूमि और समकालीन भारतीय कला पर उसके दीर्घकालीन प्रभाव का गंभीर विश्लेषण प्रस्तुत करना है।

उद्देश्य

इस शोध का प्रमुख उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि जामिनी रॉय ने पटचित्र शैली को आधुनिकता के संदर्भ में किस प्रकार परिवर्तित किया और कैसे उन्होंने भारतीय लोककला को आधुनिक कला की मुख्यधारा में स्थान दिलाया। शोध का एक महत्वपूर्ण लक्ष्य यह भी है कि आधुनिक और समकालीन भारतीय कलाकारों पर उनके प्रभाव का अध्ययन किया जाए तथा यह समझा जाए कि उनकी शैली ने दृश्य-संस्कृति, कला-शिक्षा और कला-बाज़ार के विभिन्न आयामों को कैसे रूपांतरित किया। इसके अतिरिक्त यह शोध उस विचारधारा का विश्लेषण करता है जिसके आधार पर जामिनी रॉय ने भारतीयता और लोकसौंदर्य को आधुनिक अभिव्यक्ति का स्तंभ बनाया।

महत्व

यह शोध निम्न दृष्टियों से महत्वपूर्ण है—

1. यह भारतीय आधुनिक कला के उस दौर को समझने में सहायता करता है जिसमें परंपरा और आधुनिकता के बीच मतभेद और संवाद दोनों ही मौजूद थे।
2. जामिनी रॉय जैसे कलाकारों के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि लोककला केवल 'ग्रामीण कला' नहीं है, बल्कि उसमें एक मजबूत सांस्कृतिक, वैचारिक और सौंदर्यगत शक्ति निहित होती है जो आधुनिक कला को भी दिशा दे सकती है।
3. आधुनिक समय में वैश्वीकरण ने दृश्य संस्कृति को अत्यंत विविध और जटिल बना दिया है; ऐसे में अपनी सांस्कृतिक जड़ों के साथ आधुनिकता का संतुलन स्थापित करना आवश्यक हो गया है। जामिनी रॉय का योगदान इस सन्दर्भ में विशेष महत्त्व रखता है क्योंकि उन्होंने भारतीय संस्कृति को आधुनिक सौंदर्यबोध के साथ संयुक्त किया।
4. यह शोध कला-शिक्षा में उनके प्रभाव की पड़ताल करता है, जहाँ उनकी रेखांकन-पद्धति, रंग योजना, रूपात्मक सरलता और सांस्कृतिक निष्ठा को आज भी आदर्श माना जाता है।
5. यह अध्ययन यह संकेत करता है कि भारतीय समकालीन कला की कई प्रवृत्तियों जैसे लोक-आधारित समकालीनता, प्रतीकवादी प्रयोग, सांस्कृतिक पुनरुद्धार की जड़ें जामिनी रॉय की शैली में निहित हैं।

सीमाएँ

1. यह शोध मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों पुस्तकें, शोध-पत्र, संग्रहालय कैटलॉग और ऑनलाइन उपलब्ध सामग्री पर आधारित है, इसलिए प्रत्यक्ष अवलोकन की सीमाएँ स्वाभाविक रूप से मौजूद हैं।
2. जामिनी रॉय की कई मूल कृतियों तक प्रत्यक्ष पहुँच संभव नहीं थी, जिसके कारण शैलीगत विश्लेषण अधिकतर डिजिटल प्रतिकृतियों और मुद्रित चित्रों पर निर्भर रहा।
3. पटचित्र परंपरा स्वयं कई क्षेत्रीय विविधताओं से भरी है, परंतु इस शोध में केवल बंगाल पटचित्र और उसके प्रभाव पर ध्यान केंद्रित किया गया है; ओडिशा, राजस्थान और अन्य क्षेत्रों की तुलनात्मक शैलियाँ सम्मिलित नहीं की गईं।
4. समकालीन कलाकारों के कार्यों का व्यापक और प्रत्यक्ष सर्वेक्षण संभव नहीं था, जिसके कारण प्रभाव विश्लेषण केवल उपलब्ध उदाहरणों और प्रकाशित सामग्री पर आधारित रहा।
5. कला-बाज़ार, गैलरी नेटवर्क और समकालीन दृश्य-संस्कृति से संबंधित डेटा भी प्रकाशित रिपोर्टों पर आधारित है, जिसके कारण व्यावहारिक और वास्तविक समय के आर्थिक पक्षों का विश्लेषण सीमित रहा।

अनुसंधान पद्धति

इस शोध में गुणात्मक (Qualitative) अनुसंधान पद्धति अपनाई गई है। प्रमुख पद्धतियाँ—

1. द्वितीयक स्रोतों का विश्लेषण – पुस्तकों, शोध–लेखों, कैटलॉगों, कला–इतिहास ग्रंथों का अध्ययन।
2. तुलनात्मक अध्ययन – पटचित्र की पारंपरिक शैली और जामिनी रॉय की शैली के बीच तुलना।
3. शैलीगत विश्लेषण – रेखा, रंग, आकृति, प्रतीक और विषय-वस्तु का अध्ययन।
4. समकालीन कला-उदाहरणों का अवलोकन – आधुनिक कलाकारों के उन कार्यों का अध्ययन जिनमें रॉय का प्रभाव देखा जाता है।
5. कला–दर्शन दृष्टिकोण – भारतीयता, लोक सौंदर्य और स्वदेशीवाद की अवधारणाओं का अध्ययन।

अनुसंधान डेटा / कार्य

इस अध्ययन के लिए निम्न प्रमुख बिंदुओं को शोध-डेटा के रूप में उपयोग किया गया—

1. जामिनी रॉय की प्रमुख कृतियाँ

- गोपियों के चित्र
- घोड़ों की श्रृंखला
- मदर एंड चाइल्ड
- कृष्ण लीला आधारित चित्र
- बंगाल पटचित्र शैली से प्रेरित देवी देवताओं के चित्र

इन चित्रों में रेखा की स्पष्टता, सरल आकृतियाँ, सपाट रंग और शैलीगत संतुलन दिखाई देता है।

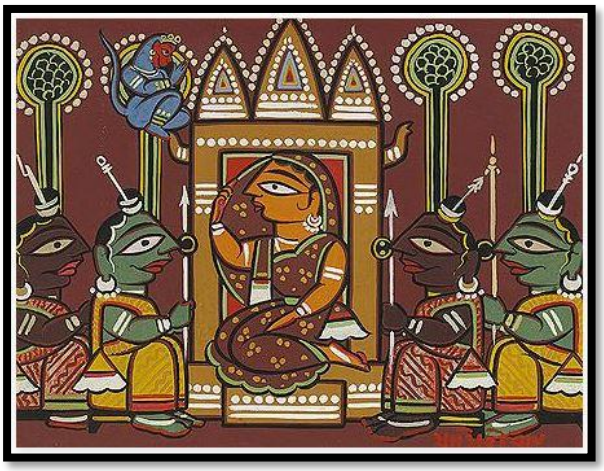
2. पटचित्र शैली की विशेषताएँ

- स्पष्ट काली रेखाएँ
- लोक कथात्मक कथावाचन
- सीमित रंग योजना (लाल, पीला, हरा, नीला)
- सपाट रंग
- सजावटी पैटर्न
- धार्मिक लोक विषय

3. समकालीन कला पर प्रभाव

- युवा कलाकारों द्वारा लोकशैली अपनाना
- गैलरी और आर्ट मार्केट में लोक-प्रेरित कार्यों की मांग
- डिजाइन, इलस्ट्रेशन और डिजिटल आर्ट में जामिनी रॉय के रूपांकन
- एडवरटाइजिंग और विज़ुअल मीडिया में पटचित्र प्रभाव





कृति का नाम: "गणेश जननी" *कृति का*

नाम: "हनुमान मीट्स सीता"

माध्यम: वूवन बैम्बू मैट पर गौश *माध्यम:*

कैनवास पर टेम्परा

आकार: 31.75 × 34.29 सेमी *आकार:*

42 × 104 सेमी

वर्ष: 1940 *वर्ष:*

1941





कृति का नाम: "कृष्णा एंड बलराम अमिड्स्ट काउज़"

"क्वीन ऑन टाइगर"

माध्यम: टेम्परा ऑन कार्ड

टेम्परा ऑन बोर्ड

आकार: 57.8 × 60 सेमी

61 × 73.5 सेमी

वर्ष: 1945

1930

कृति का नाम:

माध्यम:

आकार:

वर्ष:

II.परिणाम एवं निष्कर्ष

शोध के परिणामों से यह स्पष्ट होता है कि जामिनी रॉय ने भारतीय आधुनिक कला को एक ऐसी दिशा प्रदान की जो पाश्चात्य प्रभावों से अलग अपनी सांस्कृतिक जड़ों पर आधारित थी। उन्होंने सिद्ध किया कि आधुनिकता का अर्थ केवल तकनीकी जटिलता नहीं, बल्कि भावनात्मक स्पष्टता, सांस्कृतिक स्मृति और लोक अनुभव भी हो सकती है। पटचित्र की पारंपरिक शैली को उन्होंने जिस प्राकृतिकता, सरलता और सांस्कृतिक गहराई के साथ आधुनिक संदर्भ प्रदान किया, वह भारतीय कला इतिहास में अत्यंत महत्वपूर्ण उपलब्धि है। समकालीन कला जगत में उनके प्रभाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होते हैं। आज अनेक कलाकार लोककला को नई व्याख्याओं के साथ प्रस्तुत कर रहे हैं। कला-शिक्षा में उनके रेखांकन, रंग-संयोजन और आकृतिमूलक सादगी को महत्वपूर्ण माना जाता है। डिजाइन, डिजिटल मीडिया और सांस्कृतिक संचार में उनकी शैली के रूपांकन प्रयुक्त हो रहे हैं, जिससे यह सिद्ध होता है कि जामिनी रॉय की कला केवल अतीत की विरासत नहीं है बल्कि आज की दृश्य संस्कृति का सक्रिय अंग है।

अतः यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया जा सकता है कि जामिनी रॉय की पटचित्र शैली भारतीय आधुनिक कला का एक महत्त्वपूर्ण स्तंभ है जिसने न केवल लोककला को प्रतिष्ठित किया बल्कि भारतीय आधुनिकता को उसकी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ते हुए समकालीन कला को नए प्रतिमान प्रदान किए। उनकी कला भारतीयता, सरलता और सांस्कृतिक गौरव का ऐसा उदाहरण है जो भविष्य की कला-चेतना को भी मार्गदर्शन प्रदान करता रहेगा।

III.संदर्भ सूची

1. भारद्वाज, एस. (2016).भारतीय आधुनिक कला का विकास, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।(pp. 45–62).
2. चक्रवर्ती,एस. (2012).बंगाल की पटचित्र परंपरा, कोलकाता: विश्वभारती प्रकाशन।(pp. 101–118).
3. दास,पी. (2018). जामिनी रॉय: कला और सौंदर्यबोध, नई दिल्ली: राष्ट्रीय आधुनिक कला दीर्घा।(pp. 73–89).
4. जोशी,आर. (2015).भारतीय लोक कला और आधुनिकता, वाराणसी: भारतीय कला अनुसंधान परिषद।(pp. 55–80).
5. कुमार,ए. (2011).लोककला की सांस्कृतिक विरासत, भोपाल: मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी।(pp. 92–110).

6. मिश्रा,वी. (2019).भारत की समकालीन कला प्रवृत्तियाँ, नई दिल्ली: साहित्य भवन।(pp. 134–150).
7. मोंडल,ए. (2017).पटचित्र: इतिहास और तकनीक, कोलकाता: कला मंदिर प्रकाशन।(pp. 41–59).
8. शर्मा,डी. (2020).भारतीय कलाकार: जीवन और शैली, दिल्ली: संस्कृति प्रकाशन।(pp. 27–46).
9. सिंह,एम. (2013).लोककला और भारतीय चित्रांकन परंपरा, जयपुर: राष्ट्रीय कला अकादमी।(pp. 88–105).
10. वर्मा,जी. (2018).भारतीयता और कला अध्ययन, लखनऊ: विश्वविद्यालय प्रकाशन।(pp. 115–136).